भाग्यशाली वो नही होते जिन्हे सब कुछ अच्छा मिलता है , बल्कि वो होते है जिन्हे जो मिलता उसमे खुश रहते है। -अज्ञात।

विचार-प्रवाह देहरादून, रविवार 2 जनवरी 2022

पेज थ्री
www.page3news.in

देशों के बीच कूटनीतिक रस्साकशी जारी

जब उत्तराखंड में लगातार बारिश के चलते बाढ़ और भूस्खलन के रूप में आई त्रासदी ने पूरे देश को सकते में डाल रखा है। भारत भले चौथे नंबर पर है, लेकिन चीन के साथ जुड़ इसलिए जाता है क्योंकि इन दोनों ही देशों में उत्सर्जन की मात्रा साल-दर-साल बढ़ रही है।

मनोज शर्मा।।

अमेरिका की अपनी तरह की पहली नैशनल इंटेलिजेंस इस्टीमेट रिपोर्ट में भारत को पाकिस्तान और अफगानिस्तान समेत उन 11 देशों में शामिल किया गया है, जो जलवायु परिवर्तन के लिहाज से चिंताजनक श्रेणी में माने गए हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, ये ऐसे देश हैं, जो जलवायु परिवर्तन के कारण सामने आने वाली पर्यावरणीय और सामाजिक चुनौतियों से निपटने की क्षमता के लिहाज से खासे कमजोर हैं। संयोग कहिए कि यह रिपोर्ट ऐसे समय आई है, जब उत्तराखंड में लगातार बारिश के चलते बाढ़ और भूस्खलन के रूप में आई त्रासदी ने पूरे देश को सकते में डाल रखा है। जाहिर है, हमें इन चुनौतियों के मद्देनजर अपनी तैयारियों पर ज्यादा ध्यान देना होगा। वैश्विक संदर्भ में देखें तो रिपोर्ट की टाइमिंग इस लिहाज से महत्वपूर्ण है कि इसी महीने के आखिर में ग्लासगो में कॉप 26 क्लाइमेट चेंज कॉन्फ्रेंस शुरू होने वाली है।

रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि आने वाले समय में ग्लोबल टेंपरेचर की दशा तय करने में चीन और भारत की अहम भूमिका रहने वाली है। आखिर चीन दुनिया का सबसे बड़ा उत्सर्जक देश है। भारत भले चौथे नंबर पर है, लेकिन चीन के साथ जुड़ इसलिए जाता है क्योंकि इन दोनों ही देशों में उत्सर्जन की मात्रा साल-दर-साल बढ़ रही है। दूसरे और तीसरे स्थान पर मौजूद अमेरिका और यूरोपियन यूनियन (ईयू) अपना उत्सर्जन कम करते जा रहे हैं। हालांकि यह भी कोई छुपा तथ्य नहीं है कि भारत जैसे देशों के लिए उत्सर्जन कम करना आसान नहीं है। इसके लिए जिम्मेदार सबसे बड़ा कारक कोयले का बहुतायत में इस्तेमाल है, जिसे रातोरात कम करना संभव नहीं। एक तो इसके सारे विकल्प अपेक्षाकृत महंगे पड़ते हैं और दूसरी बात यह कि आज भी यह सेक्टर बड़े पैमाने पर लोगों को रोजगार दिए हुए है। ऐसे में कोई भी बदलाव धीरे-धीरे ही किया जा सकता है। इसके अलावा इन बदलावों के आर्थिक पहलू की भी अनदेखी नहीं की जा सकती।

रिपोर्ट में ठीक अनुमान लगाया गया है कि इन बदलावों का खर्च उठाने के सवाल पर विकासशील और विकसित देशों के बीच कूटनीतिक रस्साकशी जारी रहने वाली है। खासकर इसलिए भी कि विकसित देश पेरिस समझौते के अनुरूप 2020 से सालाना 100 अरब डॉलर जुटाने में नाकाम रहे हैं, जिससे विकासशील देशों के लिए एनडीसी (नैशनली डिटरमिन्ड कन्ट्रीब्यूशन) गोल यानी उत्सर्जन कम करने से जुड़ी राष्ट्रीय प्रतिबद्धता पूरी करना मुश्किल हो रहा है। बहरहाल, विभिन्न देशों की जिम्मेदारियां तय करते हुए भी इस बात का ख्याल रखना जरूरी है कि पर्यावरण संबंधी चुनौतियां अब इस कदर गंभीर रूप ले चुकी हैं कि इन्हें पूरी तरह राष्ट्रीय नजरिये से देखना अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारना है। इसके प्रभाव विश्वव्यापी हैं और दोष चाहे किसी भी देश के सिर पर डाला जाए इसका नुकसान पूरी दुनिया को भुगतना पड़ेगा। इसलिए रस्साकशी में उलझने के बजाय सबका जोर आम राय से रास्ता निकालने पर ही होना चाहिए।

अपना मन

अशोक वोहरा।

धर्म-दर्शन

खाना खाने के बाद वह थैला उठाकर चलने लगा कि तभी फिर महात्मा का उपदेश याद आया, 'जिसका नमक खाओ, उसका बुरा मत सोचो।' उसने अपने मन में कहा, 'खाना खाया उसमें नमक भी था। इसका बुरा नहीं सोचना चाहिए।' इतना सोचकर, थैला वहीं रख वह वापस चल पड़ा। पहरेदार ने फिर पूछा, "क्या हुआ, चोरी क्यों नहीं की?"

"देखिए जिसका नमक खाया है, उसका बुरा नहीं सोचना चाहिए। मैंने राजा का नमक खाया है, इसलिए चोरी का माल नहीं लाया। वहीं रसोई घर में छोड़ आया।" इतना कहकर वह वहां से चल पड़ा। उधर रसोइए ने शोर मचाया, "पकड़ो, पकड़ों चोर भागा जा रहा है।" पहरेदार ने चोर को पकड़कर दरबार में उपस्थित किया।

संपादकीय

साथ में ही फायदा

अब दोनों देश अपने अपने सामरिक अजेंडे के लिए इनका किस तरह से प्रयोग कर पाते हैं, यह तो आने वाला समय बताएगा। लेकिन पुतिन का आना एक बड़े महत्वपूर्ण मौके पर हो रहा है, क्योंकि पिछले कुछ सालों में कई सवाल खड़े हुए हैं। शीत युद्ध के दौरान सोवियत यूनियन और चीन अलग-अलग दिशाओं में काम कर रहे थे। सत्तर के बाद चीन अमेरिका के साथ आ गया था। शीतयुद्ध के बाद रूस और चीन ने फटाक से हाथ मिला लिया। अब भारत जिस तरह से अमेरिका और पश्चिम के साथ संबंध बढ़ रहा है, और जैसे-जैसे संतुलन बदल रहा है, उसी हिसाब से बनते जियो-पॉलिटिकल एनवायरमेंट में भारत और रूस प्रतिक्रिया कर रहे हैं। जहां तक मॉस्को का चीन की तरफ झुकाव है, उसमें भारत बहुत कुछ नहीं कर सकता क्योंकि वह पश्चिम को लेकर एक संयुक्त विपक्ष है। इसके अलावा रूसी विदेश नीति का बड़ा फ्रेमवर्क अमेरिका के विरोध को लेकर है। उसमें भी भारत बहुत कुछ नहीं कर सकता, क्योंकि भारत की अपनी चुनौती चीन को लेकर है। इसमें भारत जो कर सकता है, वह यह कि उसके रूस के साथ जो संबंध हैं, उनको अमेरिकी संबंधों से एकदम अलग कर ले। खासकर पिछले दो सालों में यह कि भारत और रूस दूर होते जा रहे हैं। अब दोनों देशों की यह पहल स्पष्ट कर रही है कि मतभेद भले बढ़ रहे हों, लेकिन दोनों देश अपनी रणनीति साथ में बनाने की कोशिश कर रहे हैं क्योंकि दोनों का ही साथ काम करने में फायदा है।

भारत का टू प्लस टू फ्रेमवर्क यूएस, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ है। रूस ऐसा चौथा देश होने जा रहा है। यह बड़ी महत्वपूर्ण बात है कि दोनों देश अपने संबंधों को मजबूत दिखाने की कोशिश कर रहे हैं।

चीन को संदेश

हर्ष वी. पंत।।

जो दिसंबर का महीना है, यह बड़ा दिलचस्प है क्योंकि इसमें पहले भारत पुतिन की मेजबानी कर रहा है, फिर उसके बाद समिट फॉर डेमोक्रेसी, जो अमेरिका के राष्ट्रपति बाइडेन ने बुलाई है, उसमें हिस्सा ले रहा है। ऐसे में जिस तरह से साल का अंत हो रहा है, उसमें भारत के सामने सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि विदेश नीति में जो बड़ी ताकतों की राजनीति है, उसे वह कैसे नेविगेट करता है। इसका एक नमूना हमको इस महीने देखने को मिलेगा। रूस और अमेरिका के संबंध काफी खराब चल रहे हैं, और भारत ही एक ऐसा देश है जो दोनों के बीच एक पुल का काम कर सकता है। भारत यह कैसे करेगा, इसका भी नमूना हमें इस महीने देखने को मिलेगा। इन चीजों का आकलन दो तरह से किया जा सकता है। एक तो यह कि पुतिन भारत आ रहे हैं। कोविड के बाद उनकी इन-पर्सन यह पहली विदेश यात्रा है।

भारत के लिए डर यह बना हुआ है कि चीन के साथ रूस के संबंध प्रगाढ़ हो रहे हैं तो भारत के साथ कमतर हो जाएंगे। पुतिन ऐसी कोशिश कर रहे हैं कि ऐसा ना दिखे। अगस्त में भारत ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सामुद्रिक सुरक्षा पर वर्चुअल बैठक की थी, जिसे पीएम नरेंद्र मोदी ने चेयर किया था। उस बैठक में भी वह

आए थे। तो पुतिन जो हिंदुस्तान को तरजीह देना चाहते हैं, वह स्पष्ट है। दूसरे यह कि टू प्लस टू बातचीत भी होगी। 6 दिसंबर को रूस के रक्षा और विदेश मंत्री भारत में अपने समकक्षों के साथ बैठे। भारत का टू प्लस टू फ्रेमवर्क यूएस, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ है। रूस ऐसा चौथा देश होने जा रहा है। यह बड़ी महत्वपूर्ण बात है कि दोनों देश अपने संबंधों को मजबूत दिखाने की कोशिश कर रहे हैं। भारत ने अमेरिकी प्रतिबंधों के डर के बावजूद रूस से एंटी मिसाइल सिस्टम एस-400 खरीदा है। ऐसा करके उसने दिखाया कि वह रूस का साथ छोड़ नहीं रहा। भले ही भारत के संबंध अमेरिका के साथ अच्छे बन रहे हों, लेकिन रूस के साथ उसके ऐतिहासिक संबंध हैं। इसमें परेशानियां जरूर हैं, जैसे कि रूस की चीन के साथ बढ़ती दोस्ती या फिर हिंद-प्रशांत और क्वाड को लेकर रूस का नकारात्मक रवैया। मगर दूसरी ओर रूस और चीन का ट्रेड इंगेजमेंट और लोगों का आपसी मिलना-जुलना बहुत कम है। हालांकि सामरिक रोडमैप में दोनों ही देशों ने अपनी-अपनी विदेश नीति में एक दूसरे का महत्व कम ना करने की प्रायॉरिटी अपनाई हुई है।

रूस के भारत के साथ संबंध मजबूत होंगे तो यह चीन के लिए भी एक महत्वपूर्ण इशारा होगा कि रूस चीन का जूनियर पार्टनर नहीं है। उसके पास भी और विकल्प हैं। रूस और चीन के जो संबंध बने हैं, वे पश्चिम को लेकर उनके नजरिए के चलते बने हैं। पहले दोनों ने एक-दूसरे के विपक्ष में भी काम किया है। लेकिन जहां तक रूस और भारत के संबंध हैं, वे तो पिछले सात दशक से चल ही रहे हैं और उनको इतनी आसानी से दरकिनार भी नहीं किया जा सकता। भारत की जो 65 फीसदी मिलिट्री सप्लाई है, वह रूस से आती है। फिर रूस ने हमेशा भारत के साथ सामरिक तकनीक शेयर की। भारत-चीन सीमा विवाद में भी रूस के साथ रक्षा संबंध बने रहे, जबकि चीन ने इस पर घोषित रूप से नाखुशी जाहिर की थी।

क्षेत्रीय नजरिए से भारत भी रूस का महत्व अच्छे से समझता है, जैसा कि पिछले महीने अफगानिस्तान में हुई बातचीत में दिखा भी।

अष्टयोग-5056

1		5		3		2
	32	7	32		30	
3		4	6			7
	22		37	7	39	
4		2			1	5
	34		34	5	28	
7		6	3		2	

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5055 का हल

2	3	4	5	6	7	1
6	28	1	36	2	30	4
3	4	5	6	7	1	2
7	36	2	37	3	25	6
4	5	6	7	1	2	3
5	33	7	37	4	33	5
1	2	3	4	5	6	7

Jagrutidaar.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

कृषि कानून को लेकर सरकार के प्रति

मोहन। सुप्रीम कोर्ट ने भी माना है कि पराली प्रदूषण की एक वजह हो सकती है, लेकिन सिर्फ पराली जलाने से वायु प्रदूषण बढ़ रहा है ऐसा नहीं है। सीजेआई ने साफ तौर पर कहा कि इसके लिए दूसरे कारण अहम् हैं जिसमें पटाखे, उद्योग-धंधे, निर्माणाधीन कार्य शामिल हैं। दिल्ली में वायु प्रदूषण के हालात इतने बुरे हैं कि सरकार को सात दिन का अवकाश घोषित करना पड़ा है। हवा में एक्यूआई का स्तर 500 तक पहुंच गया है। लॉकडाउन के बाद स्कूल कॉलेज भी खुल गए हैं। इस दौरान बच्चों के लिए सबसे बड़ी मुश्किल है। सीजेआई ने तल्ख टिप्पणी करते हुए कहा है कि लोग जिंदगी कैसे जिएंगे। प्रदूषण पर नियंत्रण करने के लिए तात्कालिक विकल्प खोजने की आवश्यकता है। वायु में बढ़ता प्रदूषण फेफड़ों के संक्रमण बढ़ाएगा और कैंसर जैसी घातक बीमारी का वाहक बनेगा। दिल्ली के हालात इसी तरह बने रहे तो को स्थिति और भी भयानक होगी। वायु प्रदूषण में पराली की सहभागिता तो 35 फीसदी तक पहुंच गई है। पराली जलाने के हर दिन कई मामले दर्ज किए जा रहे हैं।